International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय समाज पर पाश्चात्य शिक्षा का प्रभावः औपनिवेशिक काल के सन्दर्भ में

प्रभात कुमार शोधार्थी

कु. मायावती महिला पी.जी. कॉलेज

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

मो. 8743833626

सार

भारतीय समाज अपने बहुलवादी चरित्र के लिए विश्व समुदाय में ख्याति प्राप्त है। जिसकी साझा संस्कृति पूरब से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक भिन्न–भिन्न रूपों में देखी जा सकती है। औपनिवेशिक काल में पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीय समाज को एक नया दृष्टिकोण दिया जो स्वरूप में आधुनिक थी परन्तु उद्देश्य में औपनिवेशिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए एक माध्यम थी। भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा के अन्तर्द्वंद्व से ही राष्ट्रीय चेतना का विकास देखा जा सकता है जिससे भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

बीज शब्द

औपनिवेशिक काल, भारतीय समाज, पाश्चात्य शिक्षा एवं राष्ट्रीय चेतना।

समाज व्यक्तियों द्वारा एक ऐसे समूह को इंगित करता है जिसमें व्यक्ति सांस्कृतिक, राजनैतिक एकरूपता के साथ परस्पर सम्बंधित होता है। समाजशास्त्र के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसमें मनुष्य अपने नैतिक व्यक्तित्व एवं सांस्कृतिक गुणों का विकास करता है। समाज उस देश की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश का द्योतक होता है। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन ने भारतीय समाज को एकीकृत करने का जो प्रयास किया उससे भारतीय समाज एवं संस्कृति को गहरा असर हुआ।

औपनिवेशिककालीन समाज पर दृष्टिपात करते समय हम पाते हैं कि समाज बहुआयामी रूप में था। प्रारंभ में समाज हस्तशिल्प उद्योग पर आधारित था परन्तु औपनिवेशिक नीतियों एवं ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के प्रभाव ने भारतीय हस्तशिल्प उद्योग का आधारभूत ढांचा ध्वस्त कर दिया। किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था ही उसकी रीढ़ होती है। औपनिवेशिक शासन ने भारत की आर्थिक संरचना पर चोट कर उसकी रीढ़ तोड़ दी जिससे भारत आंतरिक रूप से कमजोर पड़ गया।

भारत में औपनिवेशिक कालीन पाश्चात्य शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा के मूल उद्देश्यों के विपरीत था क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य होता है व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना जबकि भारत में पाश्चात्य शिक्षा का उद्देश्य था एक मध्यस्थ वर्ग तैयार करना जो औपनिवेशिक व्यवस्था बनाये रखने में सहायक हो। जो पाश्चात्य शिक्षा यूरोप के लोगों को तर्कशील, चिंतनशील और विद्वान बनाती थी वहीं पाश्चात्य शिक्षा भारत के लोगों को अन्धभक्त एवं बुद्धिहीन बनाने के उद्देश्य से दी जा रही थी। हालांकि भारतीयों ने उस पाश्चात्य शिक्षा का लाभ उठाया एवं अपने सांस्कृतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय चेतना को जागृति किया जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का रूप लेकर स्वतंत्र भारत के रूप में परिणत हुआ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी सन् 1813 में शैक्षिक आज्ञापत्र जारी किया था। यह आज्ञा पत्र प्रत्येक दस वर्ष बाद ब्रिटिश संसद के समक्ष नवीनीकरण के लिए जाता था। सन् 1813 में जब यह आज्ञापत्र ब्रिटिश संसद के समझ गया तो इसमें धारा 43 को जोड़ दिया गया जिसमें यह वर्णन था कि ''प्रतिवर्ष कम से कम एक लाख रुपये की धनराशि साहित्य के पुनरुत्थान, भारतीय विद्वानों को प्रोत्साहित करने के लिए तथा ब्रिटिश भारतीय क्षेत्रों में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रारंभ और प्रसार के लिए व्यय की जायेगी।'' यह धारा विल्वर फोर्स और चार्ल्स ग्राण्ट, जो उस समय ब्रिटिश संसद के सदस्य थे, के प्रयासों से जोड़ी गयी। सन् 1813 के आज्ञापत्र में एक लाख रुपये को किस रूप में खर्च की जाएगी इसका वर्णन नहीं था। इस प्रकार एक विवाद खड़ा किया कि शिक्षा का माध्यम क्या हो। शिक्षा अंग्रेजी भाषा में दी जाये या देशज व वर्नाकुलर भाषा में जिसको आंग्ल प्राच्य विवाद के रूप में देखते हैं। यह भी विवाद था कि शिक्षा उच्च वर्ग को दी जाये या सभी वर्ग को क्योंकि एक लाख रूप में सम्भव नहीं था सभी को शिक्षा देना इसलिए लार्ड मैकाले के द्वारा 'निष्पंदन का सिद्धान्त' दिया गया।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि पाश्चात्य शिक्षा भारत में शिक्षा के मूल उद्देश्यों के विपरित थी। पाश्चात्य शिक्षा भारत में सिर्फ एक ऐसा वर्ग तैयार करना चाहती थी जो मध्यस्थ के रूप में औपनिवेशिक व्यवस्था बनाये रखने में सहायक हों। भारतीय समाज पाश्चात्य शिक्षा से प्रभवित तो हुई परन्तु अपनी सांस्कृतिक जड़ों से मजबूत होने के कारण अपनी राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में सफल रही।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. व्यास के.सी, ''भारत में राष्ट्रीय शिक्षा का विकास'', वोरा एण्ड कं. पब्लिशर्स बॉम्बे, 1954.
2. एस.एस. दीक्षित, ''कंट्रीव्यूशन ऑफ नेशनल मूवमेंट टू द डेवलपमेंट ऑफ इण्डियन एजुकेशन फ्रॉम 19 सेन्चुरी टू 1947''।
3. नुरुल्लाह एवं नाईक, ''ब्रिटिश अवधि के दौरान भारत में शिक्षा का इतिहास'', मैकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, बॉम्बे 1951.
4. बन्धोपाध्याय, शेखर, ''पलासी से विभाजन तक'', ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, 2008.
5. पारुलेकर, आर.बी. लिट्रेसी इन इण्डिया इन ब्रिटिश डेज, शिक्षा पब्लिकेशन, 1940.